2 मार्च 2019, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI
सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 41, अंक : 23 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
मार्च (प्रथम), 2019 (वीर नि.संवत्-2545) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

ढाईद्वीप : पूर्णता की ओर बढते कदम

आज दिनांक 5 फरवरी 2019 को तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन इन्दौर में ढाईद्वीप के निर्माण संबंधी आगामी रूपरेखा की तैयारी के लिये ढाईद्वीप जिनायतन ट्रस्ट के ट्रस्टियों एवं समाज के प्रमुख लोगों की एक अनौपचारिक मीटिंग की गई। इसमें ढाईद्वीप ट्रस्ट के ट्रस्टी मण्डल में से सर्वश्री डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर (कार्याध्यक्ष), श्रीमती सोनल जैन इन्दौर (महामंत्री), शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर (मंत्री), प्रदीपकुमारजी चौधरी किशनगढ (ट्रस्टी), कु. सृष्टि जैन इन्दौर (ट्रस्टी), कमलजी बड़जात्या मुम्बई (ट्रस्टी), कैलाशचंदजी छाबड़ा मुम्बई (ट्रस्टी) के अलावा अशोकभाई बादर जामनगर, विपिनजी शास्त्री मुम्बई, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पीयूषजी शास्त्री जयपुर आदि महानुभाव उपस्थित थे।

इस मीटिंग में ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्रीमती शोभा रसिकलाल धारीवाल पुणे (ट्रस्टी), श्री विपिनभाई बादर जामनगर (ट्रस्टी), प्रेमचंदजी बजाज कोटा (ट्रस्टी), सौ.जाह्नवी धारीवाल पुणे (ट्रस्टी), महेन्द्रकुमारजी चौधरी भोपाल (कोषाध्यक्ष), आनंदजी पाटनी इन्दौर (ट्रस्टी) के अतिरिक्त मुम्बई से अनंतभाई ए. शेठ (संस्थापक), श्री कान्तिभाई मोटानी, नितिनभाई शाह, अक्षयभाई दोशी, जयपुर से डॉ. संजीवजी गोधा, राहुलजी गंगवाल, दिल्ली से आदीशजी जैन, कोलकाता से सुरेशजी पाटनी आदि महानुभाव अपनी व्यस्ततावश नहीं आ सके, लेकिन उनकी पूर्ण सहमति रही।

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अस्वस्थता के कारण मीटिंग की अध्यक्षता श्रीमान् प्रदीपजी चौधरी किशनगढ ने की। मीटिंग में ट्रस्ट के मंत्री श्रीमान् शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने ढाईद्वीप की अभी तक की प्रगति की जानकारी देते हुए बताया कि श्रीमान् मुकेशजी जैन ढाईद्वीप के स्वप्नदृष्टा थे, वे इस प्रोजेक्ट को पूरी तरह देख रहे थे, परन्तु उनके असामयिक निधन के बाद अब ट्रस्ट मण्डल को मिलकर इसे पूरा करने की जिम्मेदारी उठानी है। इसके लिये श्री अमित खण्डेलवाल 'आर्च पॉइन्ट' जयपुर के डायरेक्टर को प्रोजेक्ट का आर्किटेक्ट नियुक्त कर - इस प्रोजेक्ट में अभी तक क्या हुआ है/क्या बाकी है और उसे किस प्रकार पूरा किया जायेगा, इसकी रूपरेखा तैयार करने की जिम्मेदारी दी गई थी। इसके लिये उन्होंने इस काम से संबंधित सभी क्षेत्रों के विशेषज्ञों की टीम तैयार की है; सभी ने ढाईद्वीप का निरीक्षण कर अपनी विस्तृत रिपोर्ट तैयार की है, जिसके आधार पर वे जयपुर से डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार कर लाये हैं।

आर्किटेक्ट श्री अमित खण्डेलवाल ने इस प्रोजेक्ट की विस्तृत जानकारी देते हुए सभी को बताया कि श्री मुकेशजी ने ढाईद्वीप की जिसप्रकार विश्वस्तरीय बनाने की परिकल्पना की थी, उसको साकाररूप देने के लिये लगभग 20-25 करोड़ रुपये की लागत और 2.5 से 3 वर्ष का समय लगेगा।

इसके साथ ही यह ढाईद्वीप कैसे पूर्ण होगा, पूर्ण होने पर किसप्रकार दिखाई देगा, उसे किस प्रकार पूरा कर सकेंगे आदि अनेक विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला और सभी उपस्थित महानुभावों के प्रश्नों का संतोषपूर्ण समाधान दिया।

सभी ने विचार करते हुए निर्णय किया कि इस विश्वस्तरीय कार्य को हम चरणबद्ध तरीके से पूर्ण करें और प्रथम चरण में ढाईद्वीप की संरचना का काम हाथ में लेकर उसे पूर्ण किया जावे। इस कार्य में लगभग 15 करोड़ की लागत आयेगी।

प्रथम चरण में ढाईद्वीप जिनालय का निर्माण पूर्ण होकर सभी 1143 वीतरागी जिनप्रतिमाएं विराजमान हो जाये तथा सम्पूर्ण जैन समाज वीतरागी जिनबिम्बों के दर्शन से शीघ्र ही लाभान्वित हो सके - ऐसा संकल्प श्री विपिनजी शास्त्री मुम्बई ने लिया और यह विश्वास व्यक्त किया कि यह जिनालय प्रस्तावित समयानुसार ही पूर्ण हो जायेगा।

इस कार्य को पूर्ण करने हेतु लागत 15 करोड़ रुपये की धनराशि मुमुक्षु समाज से एकत्रित करने का दायित्व स्वेच्छा से स्वयं अपने ऊपर लिया। मीटिंग में सम्मिलित सभी महानुभावों ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करके अनुमोदना व्यक्त की तथा ढाईद्वीप जिनालय को पूर्ण करने हेतु वित्त व्यवस्था की जवाबदारी श्री विपिनजी जैन मुम्बई को सौंपी।

इसके पश्चात् निर्माण कार्य हेतु एक निर्माण समिति बनाने का विचार हुआ जो ढाईद्वीप के निर्माण संबंधित समस्त कार्यों की देखरेख करे। शुद्धात्मप्रकाशजी को संबंधित लोगों से बात कर इसकी कमेटी गठन करने हेतु नाम प्रस्तावित करने की जिम्मेदारी दी गयी।

सभी ने ढाईद्वीप के प्रोजेक्ट को शीघ्र पूरा कर जल्दी से जल्दी पंचकल्याणकपूर्वक जिनबिम्ब विराजमान करने का संकल्प दोहराया।

अंत में ढाईद्वीप में विराजमान सभी तीर्थंकरों के जयघोष के साथ मीटिंग सम्पन्न हुयी। **- महामंत्री-ढाईद्वीप जिनायतन, इन्दौर**

सम्पादकीय –

ऐसे क्या पाप किये?

24

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

मृत्यु को अमृत महोत्सव बनाने वाला मरणोन्मुख व्यक्ति तो जीवनभर के तत्त्वाभ्यास के बल पर मानसिकरूप से अपने आत्मा के अजर-अमर-अनादि-अनंत, नित्यविज्ञान घन व अतीन्द्रिय आनन्द स्वरूप के चिन्तन-मनन द्वारा देह से देहान्तर होने की क्रिया को सहज भाव से स्वीकार करके चिर विदाई के लिए तैयार होता है। साथ ही चिर विदाई देने वाले कुटुम्ब-परिवार के विवेकी व्यक्ति भी बाहर से वैसा ही वैराग्यप्रद वातावरण बनाते हैं तब कहीं वह मृत्यु अमृत महोत्सव बन पाती है।

कभी-कभी अज्ञानवश मोह में मूर्च्छित हो परिजन-पुरजन अपने प्रियजनों को मरणासन्न देखकर या मरण की संभावना से भी रोने लगते हैं, इससे मरणासन्न व्यक्ति के परिणामों में संक्लेश होने की संभावना बढ़ जाती है अतः ऐसे वातावरण से उसे दूर ही रखना चाहिए।

शंका : जब मृत्यु के समय कान में णमोकार मंत्र सुनने-सुनाने मात्र से मृत्यु महोत्सव बन जाती है, तो फिर जीवनभर तत्त्वाभ्यास की क्या जरूरत है? जैसा कि जीवन्धर चरित्र में आई कथा से स्पष्ट है। उस कथा में तो साफ-साफ लिखा है – ''महाराज सत्यन्धर के पुत्र जीवन्धर कुमार के द्वारा एक मरणासन्न कुत्ते के कान में णमोकार मंत्र सुनाया था, जिसके फलस्वरूप वह कुत्ता स्वर्ग में अनेक ऋद्धियों का धारक देव बना।''

समाधान : यह पौराणिक कथा अपनी जगह पूर्ण सत्य है, पर इसके यथार्थ अभिप्राय व प्रयोजन को समझने के लिए प्रथमानुयोग की कथन पद्धति को समझना होगा। एतदर्थ पण्डित टोडरमल कृत मोक्षमार्ग प्रकाशक का निम्नकथन दृष्टव्य है।

''जिसप्रकार किसी ने नमस्कार मंत्र का स्मरण किया व अन्य धर्म साधन किया, उसके कष्ट दूर हुए, अतिशय प्रगट हुए; वहाँ उन्हीं का वैसा फल नहीं हुआ; परन्तु अन्य किसी कर्म के उदय से वैसे कार्य हुए; तथापि उनको मंत्र स्मरणादि का फल ही निरूपित करते हैं।.....'' (क्रमशः)

चलो सूरत! चलो सूरत!! चलो सूरत!!!

श्री वीतराग विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

रविवार, दिनांक 19 मई से बुधवार, 5 जून 2019

के अवसर पर

विगत 41 वर्षों से कार्यरत जैन समाज का अग्रणीय संस्थान

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में

प्रवेश पाने का स्वर्णिम अवसर

योग्यता : किसी भी बोर्ड से दसवीं कक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण।

विशेषताएं

- डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल और पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के सानिध्य में रहकर 5 वर्षों तक जैनदर्शन का तलस्पर्शी मर्म समझने का स्वर्णिम अवसर।
- मात्र 5 वर्ष में जैनधर्म के आधिकारिक विद्वान बनें।
- स्वयं स्वाध्याय कर आत्मकल्याण करें, समाज को आत्म-कल्याणकारी धर्म के मार्ग पर लगायें।
- सरकारी मान्यता प्राप्त स्नातक डिग्री (''शास्त्री'' BA के समकक्ष)।
- आगे उच्च (सर्वोच्च) शिक्षा प्राप्त करने के अवसर उपलब्ध।
- शिक्षण के क्षेत्र में सुनहरे अवसर।
- सम्पूर्ण 5 वर्ष तक आवास एवं भोजन निःशुल्क।
- अब तक लगभग 800 स्नातक, सभी उच्च पदस्थ।
- विशाल शिक्षण संस्थानों के संचालन में रत।
- विश्वविद्यालय, कॉलेज और स्कूलों में प्रोफेसर, लेक्चरर और शिक्षक पदों पर कार्यरत।

शोक समाचार

जयपुर (राज.) निवासी स्वतंत्रता सेनानी पण्डित अर्जुनलालजी सेठी के वरिष्ठ पुत्र **श्री प्रकाशचंदजी सेठी** का दिनांक 3 फरवरी को 93 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप अपने समय के गणित एवं विज्ञान के प्रख्यात शिक्षक थे। आप शिक्षा विभाग में अपनी उत्कृष्टतम सेवाएं देते हुए इन्स्पेक्टर ऑफ स्कूल के पद से सेवानिवृत्त हुए। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 11 हजार रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दुःखों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो – यही मंगल भावना है।

श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय में अन्तिम वर्ष के छात्रों का –

विदाई एवं दीक्षांत समारोह संपन्न

जयपुर (राज.) : ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में सातवें वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिनांक 22 फरवरी को दोपहर में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के शास्त्री तृतीय वर्ष को शास्त्री द्वितीय वर्ष ने भावभीनी विदाई दी।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सुशीलजी गोदिका एवं मुख्य अतिथि श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल थे। इसके अतिरिक्त पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन वैद्य, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, डॉ. महावीरजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित सुनीलजी प्रतापगढ, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री, पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित गौरवजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री, श्रीमती कमला भारिल्ल, श्रीमती गुणमाला भारिल्ल, कु. प्रतीति पाटील आदि महानुभाव भी मंचासीन थे।

कार्यक्रम में शास्त्री तृतीय वर्ष के सभी विद्यार्थियों ने अपने अनुभव सुनाते हुए महाविद्यालय को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्या अध्ययन का सर्वश्रेष्ठ केन्द्र बताया, हमारे सर्वांगीण विकास में सन्नद्ध महाविद्यालय में अपना स्वर्ण युग व्यतीत हुआ बताते हुये स्वयं को सौभाग्यशाली बताया तथा तत्त्वज्ञान को अपने जीवन में उतारने की भावना व्यक्त की। साथ ही सभी विद्यार्थियों ने जीवनपर्यंत स्वाध्याय एवं तत्त्वप्रचार का संकल्प भी लिया।

कार्यक्रम में शास्त्री द्वितीय वर्ष द्वारा विदाई समारोह में पंचकल्याणक का प्रस्तुतिकरण विशेष उल्लेखनीय रहा।

कार्यक्रम का मंगलाचरण सहज जैन पिड़ावा एवं संयम जैन देशमाने ने किया एवं संचालन विनय जैन, मयंक जैन, समर्थ जैन ने किया।

दीक्षांत समारोह – दिनांक 22 फरवरी की रात्रि में शास्त्री तृतीयवर्ष के छात्रों का दीक्षांत समारोह संपन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री राजेन्द्र के. गोधा (अध्यक्ष–महावीर स्कूल समिति एवं सम्पादक–समाचार जगत) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री भास्करजी शर्मा (प्राचार्य–राजकीय महाराजा संस्कृत महाविद्यालय) एवं पण्डित अरुणजी शास्त्री बण्ड (प्राचार्य–राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, महापुरा)उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त सभी स्थानीय विद्वात्गण मंचासीन थे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री बमनौरा ने किया। महाविद्यालय का संक्षिप्त परिचय एवं रिपोर्ट श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने प्रस्तुत की।

तत्पश्चात् मंचासीन अतिथियों द्वारा शास्त्री तृतीयवर्ष के छात्रों को अपने परिजनों के साथ सिद्धांत शास्त्री की डिग्री प्रदान की गई। इस प्रसंग पर श्री वीतराग–विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड के रजिस्ट्रार डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने सिद्धांत शास्त्री की उपाधि की घोषणा करते हुए कहा कि आप सभी डिग्री की गौरव गरिमा सदा बनाये रखें।

अन्त में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के वीडियो प्रवचन द्वारा आशीर्वचन प्राप्त हुआ। अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री राजेन्द्र के. गोधा द्वारा छात्रों को विशेष प्रेरणा मिली। साथ ही डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री भास्करजी शर्मा, पण्डित अरुणजी बण्ड, पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री ने भी छात्रों को विशेष उद्बोधन प्रदान किया। संचालन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

पुरस्कार वितरण समारोह – दिनांक 23 फरवरी को रात्रि में महाविद्यालय का पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न हुआ, जिसमें श्री अजितप्रसादजी दिल्ली, श्री निहालचंदजी जैन, सी.ए. शांतिलालजी गंगवाल, श्री शांतिलालजी चौधरी, श्री संजयजी कोठारी, श्री आदीशजी दिल्ली, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा के अतिरिक्त सभी विद्वत्गण मंचासीन थे।

सर्वप्रथम पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने सत्र 2018–19 के परीक्षा परिणामों की घोषणा की, जिसके अन्तर्गत उपाध्याय वरिष्ठ के **यश जैन खुरई** ने प्रथम व **शाश्वत जैन भोपाल** ने द्वितीय स्थान, शास्त्री प्रथम वर्ष के **अर्पित जैन भगवां** ने प्रथम व **संयम जैन दिल्ली** ने द्वितीय स्थान, शास्त्री द्वितीय वर्ष के **दुर्लभ जैन गुढाचन्द्रजी एवं समर्थ जैन विदिशा** ने प्रथम व **अंकित जैन भगवां** ने द्वितीय स्थान तथा शास्त्री तृतीय वर्ष के **श्रुति जैन जयपुर** ने प्रथम व **नयन जैन बरायठा** ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। शास्त्री वर्ग में **आप्त अनुशील जैन दमोह** ने सर्व प्रथम स्थान प्राप्त किया।

आदर्श पुरस्कारों के अन्तर्गत उपाध्याय कनिष्ठ से **समर्थ जैन हरदा,** उपाध्याय वरिष्ठ से **यश जैन खुरई,** शास्त्री प्रथम वर्ष से **संभव जैन दिल्ली,** शास्त्री द्वितीय वर्ष से **अंकित जैन भगवां** एवं शास्त्री तृतीय वर्ष से **नयन जैन बरायठा** ने आदर्श विद्यार्थी पुरस्कार प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त विशेष उन्नति पुरस्कार **स्वप्निल जैन सिवनी (शास्त्री द्वितीय वर्ष),** समस्त कक्षाओं में आदर्श छात्र पुरस्कार **समर्थ जैन विदिशा (शास्त्री द्वितीय वर्ष)** ने प्राप्त किया।

कार्यक्रम का संचालन एवं आभार प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया। ●

जैन न्याय पर विशेष गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में सातवें वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिनांक 23 फरवरी को दोपहर में '**न्याय : एक परिशीलन**' विषय पर महाविद्यालय के छात्रों द्वारा गोष्ठी संपन्न हुई।

गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित शिखरचंदजी विदिशा एवं निर्णायक पण्डित शिखरचंदजी निवाई व डॉ.ज्योति सेठी जयपुर थे। साथ ही श्री शांतिलालजी चौधरी, श्री सुनीलजी चौधरी भीलवाड़ा, श्री महेन्द्रजी गोधा जयपुर आदि मंचासीन थे। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में **अखिल जैन मण्डीदीप** (शास्त्री प्रथम वर्ष) एवं **अरिहंत जैन भिण्ड** (शास्त्री द्वितीय वर्ष) चुने गये।

संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के अमन जैन दिल्ली एवं श्रुति जैन जयपुर ने एवं मंगलाचरण संयम देशमाने ने किया।

आभार प्रदर्शन एवं ग्रंथ भेंट जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

Reg.No. A803 (N)

श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट (रजि.) नागपुर द्वारा संचालित

श्री महावीर विद्या निकेतन

विशुद्ध अध्यात्म के प्रचार–प्रसार हेतु स्थापित महाराष्ट्र का अग्रणी संस्थान

कक्षा 6 वीं पास प्रतिभाशाली बालकों के लिए स्वर्णिम अवसर!

साक्षात्कार शिविर : शुक्रवार 19 से, रविवार 21 अप्रैल 2019

प्रतिभा पात्रता
प्रथम श्रेणी में
कक्षा 6 वीं कक्षा
पास जैनधर्म के संस्कार
पालन में अभिरुची

* लौकिक शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा
* अंग्रेजी, सेमी अंग्रेजी माध्यम से लौकिक शिक्षा
* अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, कम्प्यूटर आदि विषयों की कोचिंग
* व्यक्तित्व-विकास के लिए पुस्तकालय, योगा, खेलकूद, भ्रमण एवं कैम्प का आयोजन

आत्मार्थी पालक ध्यान दें।

** प्रवेश प्रक्रिया **

कक्षा 7 वीं में प्रवेश इच्छुक विद्यार्थी 31 मार्च 2019 तक अंक सूची की फोटोकॉपी सहित प्रवेश फॉर्म कार्यालय में जमा करावें।

एवं 19 अप्रैल से 21 अप्रैल 2019 तक संस्था द्वारा आयोजित **साक्षात्कार शिविर** में पालकों के साथ अनिवार्य रूप से उपस्थित होवें।

: सम्पर्क सूत्र :

मंत्री - अशोक कुमार जैन 7588740963 निर्देशक - डॉ. राकेश जैन शास्त्री 9373005801 संयोजक - प्रियदर्शन जैन 9881598899 प्राचार्य - पं. विपिन जैन शास्त्री 9860140111

उपप्राचार्य - पं. विनीत जैन शास्त्री 8439222105, प्रबन्धक - पं. सुदर्शन जैन शास्त्री 9403646327

निवेदक : **श्री महावीर विद्या निकेतन**

नेहरु पुतला के सामने, इतवारी, नागपुर- 440002(महा.) फोन नं. 9373750923

अधिक जानकारी हेतु Log in करें - www.vidyaniketan.weebly.com E-mail: shreemahaveervidyaniketan@gmail.com

सर्वज्ञसिद्धि पर संगोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में सातवें वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिनांक 23 फरवरी को प्रात:काल परमागम ऑनर्स की संगोष्ठी संपन्न हुई।

इस संगोष्ठी के अन्तर्गत डॉ. शांतिकुमारजी पाटील द्वारा '**जैनदर्शन के सभी सिद्धांतों का मूल आधार–सर्वज्ञता**' विषय पर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा '**विभिन्न शास्त्रों के परिप्रेक्ष्य में और तर्क की कसौटी पर सर्वज्ञसिद्धि**' विषय पर, विदुषी स्वानुभूति शास्त्री द्वारा '**सर्वज्ञता का स्वरूप, सर्वज्ञसिद्धि की आवश्यकता और नहीं मानने से हानि**' विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया गया। अन्त में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा **सर्वज्ञसिद्धि** विषय पर हुआ वीडियो प्रवचन दिखाया गया।

संगोष्ठी का संचालन विदुषी स्वानुभूति शास्त्री मुम्बई ने किया।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

19 मई से 5 जून	**सूरत**	**प्रशिक्षण शिविर,**
7 जून से 7 जुलाई	**विदेश**	**तत्त्वप्रचारार्थ**
7 से 14 जून	शिकागो	
14 से 21 जून	न्यूजर्सी	
21 से 28 जून	डलास	
28 जून से 7 जुलाई	लॉस एन्जिल्स	
2 से 11 अगस्त	**जयपुर**	**महाविद्यालय शिविर**

अग्रिम आमंत्रण

दिल्ली : यहाँ श्री सिद्धशिला परिसर, करण गली, विश्वास नगर में जैन युवा फैडरेशन एवं ज्ञान चेतना ट्रस्ट दिलशाद गार्डन के तत्त्वावधान में फाल्गुन अष्टाह्निका में दिनांक 13 से 21 मार्च तक श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान एवं आध्यात्मिक शिविर आयोजित होने जा रहा है।

विद्वत्सान्निध्य – डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित प्रद्युम्नजी मुजफ्फरनगर। दिनांक 19 मार्च को रात्रि 8 बजे पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा विशेष व्याख्यान होगा। **प्रतिष्ठाचार्य –** ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री, पण्डित संजयजी मंगलायतन, पण्डित अशोकजी उज्जैन, पण्डित सम्मेदजी इन्दौर, पण्डित अनुभवजी जबलपुर, पण्डित विवेकजी दिल्ली।

सभी साधर्मीजन सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं।

संपर्क सूत्र – वज्रसेन जैन (संयोजक), सुरेन्द्र जैन 'मिन्टू' (अध्यक्ष) 9818260976, मुरारीलाल जैन (उपाध्यक्ष), नीरज जैन (ट्रस्टी व महामंत्री) 9310860590, 9354750121, अतुल जैन (मंत्री) 9625030988

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

तत्वज्ञान से सुरभित हो, अपना यह परिवार, रिश्ते सदा संवारिये, सुख शान्ति हर द्वार।
साधर्मी साधर्मी मिलें, हो रिश्तों में सुगन्ध, मोक्षमार्ग प्रशस्त हो, हो ऐसा सम्बन्ध।।

क्या आप अपने बेटे या बेटी के लिये योग्य संबंध खोज रहे हैं ?
क्या आप चाहते हैं कि आपको बहू या दामाद ऐसा मिले जो रात्रि भोजन त्याग, जमीकंद त्याग और जिनशासन के सिद्धांतों के प्रतिनिष्ठा वाला हो ?
तो अवसर आ गया है अब चूकना योग्य नहीं है अवश्य पधारिये

मुमुक्षु मंडप 2019
तत्वज्ञान से संस्कारित परिवारों के लिये मंगल आयोजन
परिचय सम्मेलन में

आप सबको जानकर प्रसन्नता होगी कि तत्वज्ञान से जुड साधर्मी परिवारों के विवाह संबंधी कार्य को आसान बनाने के उद्देश्य से मुमुक्षु मंडप का आयोजन किया जा रहा है । इस अवसर पर मुमुक्षु मंडप परिचय पुस्तिका का प्रकाशन किया जायेगा । इसमें परिचय प्रकाशित करने के इच्छुक साधर्मी **Whatsapp 9752756445** से फार्म प्राप्त करें । कार्यक्रम में पधारने वाले साधर्मियों के आवास और भोजन की समुचित व्यवस्था की जायेगी ।

आयोजन तिथि
रविवार, 21 अप्रैल 2019
स्थान - दीनदयाल नगर, मकरोनिया, सागर म.प्र.

आयोजक - मुमुक्षु मंडप आयोजन समिति, मध्यप्रदेश
अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, मध्यप्रदेश
सहयोगी - सर्वोदय ज्ञानपीठ जबलपुर
संपर्क - 9826051138, 9425816135, 9300642434, 8442074031
ईमेल - mumukshumandap2019gmail.com

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में –

सप्तम् वार्षिकोत्सव सानन्द संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 22 से 24 फरवरी, 2019 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का सप्तम् वार्षिकोत्सव अनेक मांगलिक आयोजनों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर दिनांक 22 फरवरी को प्रात: डॉ. भारिल्ल द्वारा रचित श्री द्रव्यसंग्रह विधान के उपरान्त उद्घाटन सभा हुई, तत्पश्चात् डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा मोक्षमार्ग प्रकाशक के मंगलाचरण पर मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला।

वार्षिकोत्सव का प्रारम्भ श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन परिवार जयपुर द्वारा ध्वजारोहण करके किया गया। मण्डप उद्घाटन श्री ताराचंदजी सोगानी जयपुर एवं मंच उद्घाटन श्री शांतिलालजी चौधरी भीलवाड़ा ने किया। समारोह का उद्घाटन श्री चैनसिंहजी मेहता भीलवाड़ा द्वारा किया गया। सभी अतिथियों का सम्मान श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने किया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री संजयजी दीवान सूरत थे। टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदिका के अतिरिक्त डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर, पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. महावीरजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, सरोजजी कटारिया आदि महानुभाव मंचासीन थे।

मंगलाचरण कु. प्रतीति पाटील ने एवं मंच संचालन ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

श्री द्रव्यसंग्रह विधान के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती कुसुम महेन्द्रकुमारजी गंगवाल जयपुर थे एवं आमंत्रणकर्ता श्री प्रकाशचंदजी छाबड़ा सूरत, श्री वीतराग–विज्ञान महिला मण्डल टोडरमल स्मारक भवन, श्री नीलेशकुमार ऋषभ शास्त्री संयम जैन दिल्ली थे।

महोत्सव में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर एवं पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर के प्रवचनों का लाभ मिला।

द्रव्यसंग्रह विधान के समस्त कार्य डॉ. शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित वीकेशजी शास्त्री द्वारा टोडरमल महाविद्यालय के छात्रों के सहयोग से संपन्न हुये।

दिनांक 22 फरवरी को दोपहर में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय का विदाई समारोह एवं रात्रि में दीक्षांत समारोह; दिनांक 23 फरवरी को प्रात: परमागम ऑनर्स द्वारा 'सर्वज्ञसिद्धि' पर संगोष्ठी व दोपहर में महाविद्यालय के छात्रों द्वारा 'जैन न्याय' पर विशेष गोष्ठी तथा रात्रि में महाविद्यालय का पुरस्कार वितरण समारोह भी संपन्न हुआ। (इनके विस्तृत समाचार पृथक् से दिये गये हैं।)

दिनांक 24 फरवरी को प्रात:काल डॉ. शांतिकुमारजी पाटील के प्रवचन के उपरांत संजयजी दीवान, वीरेशजी कासलीवाल, भरतभाई मेहता, अमितजी बड़जात्या, नितिनजी शास्त्री आदि सूरत से पधारे अनेक साधर्मियों ने सूरत में 19 मई से 5 जून तक होने वाले 53वें शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर का आमंत्रण दिया। इसके अतिरिक्त विश्वास नगर–दिल्ली से पधारे साधर्मियों ने फाल्गुन माह की अष्टाह्निका में होने वाले सिद्धचक्र मंडल विधान का आमंत्रण दिया। इसके पश्चात् पण्डित मनोजजी मुजफ्फरनगर द्वारा ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण करायी गई ग्रन्थाधिराज समयसार की आत्मख्याति टीका का विमोचन हुआ।

भव्य जिनेन्द्र रथयात्रा बापूनगर के प्रमुख मार्गों का भ्रमणकर पुन: स्मारक आयी, तत्पश्चात् सीमंधर जिनालय एवं पंचतीर्थ जिनालय में विराजमान सभी जिनबिम्बों के महामस्तकाभिषेक का मंगलमयी आयोजन किया गया। इसके अन्तर्गत श्री संजयजी दीवान व सूरत मुमुक्षु ग्रुप द्वारा श्री महावीर भगवान, श्री महेन्द्रकुमारजी संजीवजी गोधा परिवार जयपुर द्वारा श्री आदिनाथ भगवान, श्री महेन्द्रकुमार राहुलजी गंगवाल परिवार जयपुर द्वारा श्री शान्तिनाथ भगवान, श्री सुशीलजी सौरभजी गोदिका जयपुर द्वारा श्री बाहुबली भगवान एवं श्री अजितप्रसादजी आदीशजी जैन दिल्ली द्वारा श्री पार्श्वनाथ भगवान का सर्वप्रथम अभिषेक किया गया।

पण्डित शिखरचंदजी विदिशा ने सीमंधर भगवान, श्री परितोष गौरवजी जैन जयपुर ने युगमन्धर भगवान, श्री संजयजी कोठारी मुम्बई ने बाहु भगवान एवं श्री सौरभजी मेरठ ने सुबाहु भगवान का, चतुर्मुखी नेमिनाथ भगवान का श्री अशोकजी पाटनी जयपुर श्री मूलचंदजी छाबड़ा जयपुर श्री कैलाशचंदजी सेठी जयपुर एवं चतुर्मुखी वासुपूज्य भगवान का श्री चैनसिंहजी मेहता श्री शांतिलालजी चौधरी भीलवाड़ा ने प्रथम अभिषेक किया। सीमंधर जिनालय में मूलनायक सीमंधर भगवान का अभिषेक श्री सुशीलजी गोदिका जयपुर ने, चंद्रप्रभ भगवान का अभिषेक श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली ने, पद्मप्रभ भगवान का अभिषेक पण्डित शिखरचंदजी विदिशा ने एवं सुपार्श्वनाथ भगवान का अभिषेक श्री महेन्द्रजी राहुलजी गंगवाल जयपुर ने किया। मस्तकाभिषेक पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई के निर्देशन में पूर्ण हुआ।

रथयात्रा में आदिनाथ भगवान को रथ पर विराजमान करके लेकर चलने का सौभाग्य श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्री संजयजी कोठारी, श्री अशोकजी जैन जयपुर को प्राप्त हुआ। कुबेर के रूप में श्री महेन्द्रकुमारजी गंगवाल रथ में उपस्थित थे।

महोत्सव में सैंकड़ों साधर्मियों ने पधारकर लाभ लिया।●

आचार्य धरसेन दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय कोटा में –

प्रवेश हेतु अपूर्व अवसर

कोटा (राज.) : आचार्य धरसेन दि.जैन सि.महाविद्यालय के 12वें सत्र का शुभारंभ 25 जून से हो रहा है। महाविद्यालय में 10वीं कक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। छात्रों को जैनधर्म के सिद्धांतों के अध्ययन के साथ माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की वरिष्ठ उपाध्याय (12वीं) एवं राज. संस्कृत विश्वविद्यालय की शास्त्री (बी.ए.समकक्ष) डिग्री पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है। छात्रों के लौकिक विकास हेतु अंग्रेजी, विज्ञान एवं कम्प्यूटर की शिक्षा भी प्रदान की जाती है।

यहाँ छात्रों के आवास, भोजन एवं शिक्षा की संपूर्ण व्यवस्था नि:शुल्क रहती है। जो भी छात्र प्रवेश इच्छुक हों वे निम्न पते से पत्र या फोन द्वारा प्रवेश फार्म मंगा सकते हैं। प्रवेश–प्रक्रिया 19 मई से 5 जून 2019 तक सूरत (गुज.) में लगने वाले प्रशिक्षण शिविर के दौरान संपन्न होगी।

संपर्क – पण्डित धर्मेन्द्र शास्त्री (प्राचार्य) मो. 9785643203; पण्डित सौरभ शास्त्री (अधीक्षक) मो. 7891563353; **फार्म मंगाने का पता –** बजाज पैलेस, नगर परिषद कॉलोनी, छावनी, कोटा (राज.)

पद्यात्मक विचार बिन्दु

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री–टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

प्रस्तुत पदों में हमारे विचारों, आचरण और व्यवहार में पायी जाने वाली विसंगतियों की ओर ध्यान दिलाते हुए कुछ ऐसे विचार बिन्दु प्रस्तुत किये गये हैं, जिन पर यदि गंभीरतापूर्वक गहराई से विचार किया जाये तो न सिर्फ हमारी विचारधारा में आमूलचूल परिवर्तन होगा वरन् निश्चित ही हमारे कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा। विचारशील पाठकों से अपेक्षा है कि इसका लाभ अवश्य लेंगे। अगले कुछ अंकों तक यह क्रम जारी रहेगा।

हर कोई चाहे जगत सब, अनुकूल मेरे परिणमे,
पर एक के अनुकूल वर्तन, प्रतिकूल अन्यों के बने।
संसार में अनुकूलता की, कल्पना बेकार है,
संतुष्टि इस संसार में, भगवान तेरी हार है।। २५।।

प्रतिकूल जिस संयोग को, है तू विपत्ती मानता,
वह द्रव्य निज में लीन है, तेरी निधी तुझको पता।
प्रतिकूलता अनुकूलता, यह राग का व्यापार है,
किस द्रव्य को तेरा दखल, परिणमन में स्वीकार है।। २६।।

मैं भला करता बुरा करता, कोई बनाता है मुझे,
कर्तापना यह जगत का, जग में भ्रमाता है मुझे।
रे छोड़ दे कर्तापना तू, यह सत्य का स्वीकार है,
सच्चाई से मुख मोड़ना, संसार का विस्तार है।। २७।।

जग परिणमाता है मुझे, जग का करूँ मैं परिणमन,
मिथ्यात्व है यह मान्यता, इससे बढे जग में भ्रमण।
बनकर अकर्ता मात्र ज्ञाता, रहना यही उपचार है,
वह जीव जग में ना रहे, ज्ञायक जिसे स्वीकार है।। २८।।

कर्तापना तू चाहता, करने नियंत्रण जगत पर,
पर चैन से ना सो सके, जग का नियंता कोई नर।
इतना विरोधाभास जग में, क्या ईश को स्वीकार है,
विसंगति यह जगत की, क्या ईश की ना हार है।। २९।।

यदि कोई शक्तिमान नर, सचमुच है कर्ता जगत का,
क्यों ईश निंदक जगत में, क्या है नहीं उसको पता।
सन्मार्ग सबको ना मिला, किसका कहो अपराध यह,
अपराध बिन जो दंड दे, अधिकार किसके पास यह।। ३०।।

करतार बन बन जाएंगे, सबसे दुखी व्यवहार में,
भगवन क्या चाहें दुखी हो, कोई मनुज संसार में।
भगवान के हर भक्त की, अन्य से तकरार है,
जग के नियंता ईश को, यह द्वेष क्यों स्वीकार है।। ३१।।

क्यों दुख अनेकों भोगते, क्यों झेलते धिक्कार है,
भगवान के बन्दे जगत में, क्यों नहीं हर द्वार है।
हैं भक्त कम उनसे अधिक, भगवान के अवतार है,
यह अराजकता जगत में, क्यों ईश को स्वीकार है।। ३२।।

स्वाधीनता का हनन है, कर्तापना परद्रव्य का,
क्या अन्य भी तेरा करे, स्वीकार है तुझको बता।
तू ही बता क्या बन्धनों से, तुझको धरा पर प्यार है,
फिर अन्य पर कुछ लादने का, तुझे कहाँ अधिकार है।। ३३।।

सब चाहते अपने लिये, अनुकूलता भगवान से,
परस्पर विरोधी चाहते हैं, हर भक्त की भगवान के।
दोनों ही भगवन के उपासक, किसको करे इनकार वह,
पूर्ण सबकी कामना हो, यह कल्पना बेकार है।। ३४।।

कुछ न कुछ चहिये सभी से, ऐसी है तुझमें क्या कमी,
क्या कोई वस्तु जगत में, आधी–अधूरी है बनी।
परिपूर्ण हैं वे सब स्वयं में, छ द्रव्य मिल संसार है,
पर भिन्न सबसे स्वरूप स्थित, आत्मा अविकार है।। ३५।।

अन्य से कुछ मांगना, स्वीकार है निज ह्रास का,
रे मांगना जग में किसी से, यह काम है परिहास का।
कुछ मांगना भगवान से, अविवेक है अविचार है,
रे भगवान का भगवान से, ऐसा कहाँ व्यवहार है।। ३६।।

(क्रमशः)

53वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

रविवार, दिनांक 19 मई 2019 से बुधवार, 5 जून 2019 तक

विशेष आकर्षण

इस शिविर में मुख्यरूप से पाठशालाओं में अध्यापन कराने वाले अध्यापकों को विशेष प्रशिक्षण दिया जायेगा, जिससे वे अपने नगरों में बालकों को वैज्ञानिक पद्धति से पढा सकेंगे।

साथ ही –

- आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचनों का प्रसारण।
- डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना आदि अनेक विद्वानों के प्रवचन, कक्षाओं का भरपूर लाभ।
- पाठशाला के अध्यापकों को अध्यापन हेतु विशेष प्रशिक्षण।
- देशभर के अलग-अलग प्रान्तों से पधार रहे साधर्मीजनों का मेला।
- श्री टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश लेने हेतु अपूर्व अवसर।
- बालकों हेतु डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा विशेष कक्षायें।

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

कार्यक्रम स्थल :– दयालजी आश्रम, मजूरा गेट, सूरत (गुज.)

संपर्क सूत्र -

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन-0141-2705581, 2707458;
Email - ptstjaipur@yahoo.com

आवास प्रमुख – धर्मेन्द्र शास्त्री (9724038436), अरुण शास्त्री (9377451008), सम्यक् जैन (9033325581)

असुविधा से बचने के लिये आवास फार्म भरकर हमें सूचित करें। आवास सुनिश्चित करने की अन्तिम तिथि 30 अप्रैल है। वाट्सएप से भी आवास सुनिश्चित करवा सकते हैं। निम्न लिंक पर आवास फार्म प्राप्त कर सकते हैं –

https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSdkx5amU28jDTuOPdYpdofBbzudELq_OCpfJsGZbDSxx5q6lA/viewform

नवीन प्रकाशन

पद्मनंदी पंचविंशतिका ग्रंथ का तृतीय संस्करण श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट, नागपुर द्वारा प्रकाशित हो चुका है। इसका मूल्य 50/- रुपये है।

प्राप्ति हेतु संपर्क सूत्र :– 07588740963 (अशोककुमार जैन)

जैनपथप्रदर्शक के स्वामित्व का विवरण

फार्म नं. 4 नियम नं. 8

समाचार पत्र का नाम : जैन पथप्रदर्शक (हिन्दी)

प्रकाशन स्थान : श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.)

प्रकाशन अवधि : पाक्षिक

मुद्रक : श्री प्रमोदकुमार जैन (भारतीय) जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम.आई.रोड, जयपुर (राज.)

प्रकाशक का नाम : ब्र. यशपाल जैन (भारतीय) पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)

सम्पादक का नाम : श्री रतनचन्द भारिल्ल (भारतीय) श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)

स्वामित्व : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)

मैं ब्र. यशपाल जैन एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 2-3-2019

प्रकाशक :
ब्र. यशपाल जैन
ट्रस्टी, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

प्रकाशन तिथि : 26 फरवरी 2019

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com